e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 6, June 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.423

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

चूरु जिले में कृषि विकास एवं भू–उपयोग की परिवर्तनशील प्रवृत्तियाँ

डॉ. हेमंत मंगल[1] डॉ. एम. ए. खान[2]

आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान), भारत[1,2]

सारांश :

कृषि का इतिहास भी मानव सभ्यता की तरह ही अत्यंत पुरातन है। मनुष्य ने जब आखेट, पशुपालन एवं अन्य वन्य क्रियाकलाप करने प्रारम्भ किए यद्यपी उसी को कृषि का प्रारम्भिक काल कहा जा सकता है। धीरे धीरे मनुष्य के ज्ञान मे वृद्धि होती गयी फलस्वरूप उसी अनुरूप मनुष्य की आवश्यकताए भी बढ़ती गयी। इन्ही आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मनुष्य के समस्त कार्य कृषि प्रधान होते चले गए तथा पशुपालन का स्तर गौण होता गया। चूंकि कृषि मनुष्य द्वारा किया जाने वाला प्रथम उद्देश्यपूर्ण कार्य था एवं चूंकि यह सीधे तौर पर भूमि से जुड़ा हुआ था अतः इसने क्षेत्र विशेष के भूमि उपयोग को प्रारम्भ से ही प्रभावित किया है। जनसंख्या मे निरंतर एवं तीव्र बढ़ोतरी के कारण उसी अनूरूप खाद्यान आपूर्ति की समस्या भी मनुष्य के समक्ष उत्पन्न हुई एवं इससे निपटने के लिए मनुष्य ने अपने क्षेत्र मे भूमि का उपयोग तीव्र से तीव्रतम किया। जिसका परिणाम वन–विनाश के रूप मे सामने आया। प्रस्तुत शोध पत्र मे चूरू जिले मे भूमि उपयोग के बदलते प्रारूप को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

मूल बिंदु : भू–उपयोग, कृषि विकास, मानव सभ्यता

परिचय:

यदि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे देखें तो मनुष्य ने कृषि कार्यों का आरंभ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया था एवं उसका उद्देश्य केवल मात्र स्वयं जीवनयापन करना था परंतु बढ़ते समय एवं विकास के साथ ही मानव की आवश्यकताए भी परिवर्तित होती गयी एवं उसी के अनुरूप मानव कृषि क्षेत्र मे विकास के नए–नए आयाम स्थापित करता चला गया। मानव के अपने तकनीकी ज्ञान मे वृद्धि की एवं कृषि के परंपरागत स्वरूप को परिवर्तित कर पूर्णरूप से

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

आधुनिक बना लिया। वर्तमान परिदृश्य मे देखें तो भारतीय कृषि का स्वरूप ना केवल पूर्णरूपेण व्यापारिक हो गया है अपितु कृषकों के लिए कृषि एक ऐसा उद्यम बन गया है जिसके अंतर्गत प्रत्येक कृषक के अंदर कम भूमि एवं कम समय मे अधिकाधिक उत्पादन लेने की होड़ लगी हुई है। यही कारण है की कृषि क्षेत्र मे विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों एवं रसायनों का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है, एवं भूमि उपयोग के स्वरूप मे परिवर्तन देखने को मिलता है। यद्यपी किसी क्षेत्र विशेष मे भू–उपयोग भौतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी कारको द्वारा प्रभावित एवं नियंत्रित होता है परंतु इसके साथ ही कुछ अन्य विशेष कारण भी होते है जो क्षेत्र मे भूमि उपयोग के प्रारूप को प्रभावित करते है इनमे ऐतिहासिक एवं राजनैतिक कारक प्रमुख है। चूरू जिले की अर्थव्यवस्था मे कृषि का स्थान अति–महत्वपूर्ण है। यद्यपी चूरू जिले मे कृषि हेतु भौगोलिक दशाए पूर्णत अनुकूल नहीं है तथा यहाँ आज भी कृषि वर्षा पर ही निर्भर करती है परंतु फिर भी जिले मे कृषि के स्वरूप मे पिछले दशकों मे व्यापक परिवर्तन देखने को मिले है, एक और जहां जिले मे कृषि मे आधुनिकीकरण की प्रवर्ती बढ़ी है वही बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप क्षेत्र मे कृषि जोतों के औसत आकार मे भी कमी आई है।

अध्ययन क्षेत्र :

राजस्थान राज्य के उत्तरी पूर्वी भाग में स्थित चूरू जिला राज्य के समस्त 33 जिलों में अपनी विशिष्ट भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पहचान रखता है। यह जिला यहाँ शीत ऋतु में अत्यधिक ठण्ड एवं ग्रीष्म ऋतु में अधिकतम तापमान के लिए देश भर में जाना जाता है। अवस्थिति के आधार पर देखें चूरू जिला 27^0 24′ से 29^0 00′ उतरी अक्षांश तथा 73^0 40′ से 75^0 41′ पूर्वी देशान्तर के बीच में स्थित है। वर्तमान में इसके अन्तर्गत राजगढ़, तारानगर ,चूरू, सरदारशहर, रतनगढ़, सुजानगढ़, सिद्धमुख एवं बीदासर आदि आठ तहसीलें है। यह रेल तथा सड़क मार्ग द्वारा दिल्ली, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, श्रीगंगानगर, हिसार इत्यादि से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 तथा 52 रतनगढ़, चूरू तथा राजगढ़ तहसीलों से गुजरते हैं। यह जिला उत्तर में हनुमानगढ़, दक्षिण–पूर्व में सीकर तथा झुन्झुनू, उतर–पूर्व में हरियाणा के हिसार जिलें, दक्षिण में नागौर तथा पश्चिम मे बीकानेर जिलें द्वारा सीमांकित है। इस जिले का कुल

| www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

भौगोलिक क्षेत्रफल 16830 वर्ग किमी. है जो कि राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 4.91 प्रतिशत है। चूरू जिले की भौगोलिक स्थिति यहाँ के रेगिस्तानी वातावरण तथा न्यून वर्षा के कारण से है। यह लगभग आयताकार रूप में फैला हुआ है। इस जिले की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 286.6 मीटर है।

KEYMAP OF CHURU DISTRICT

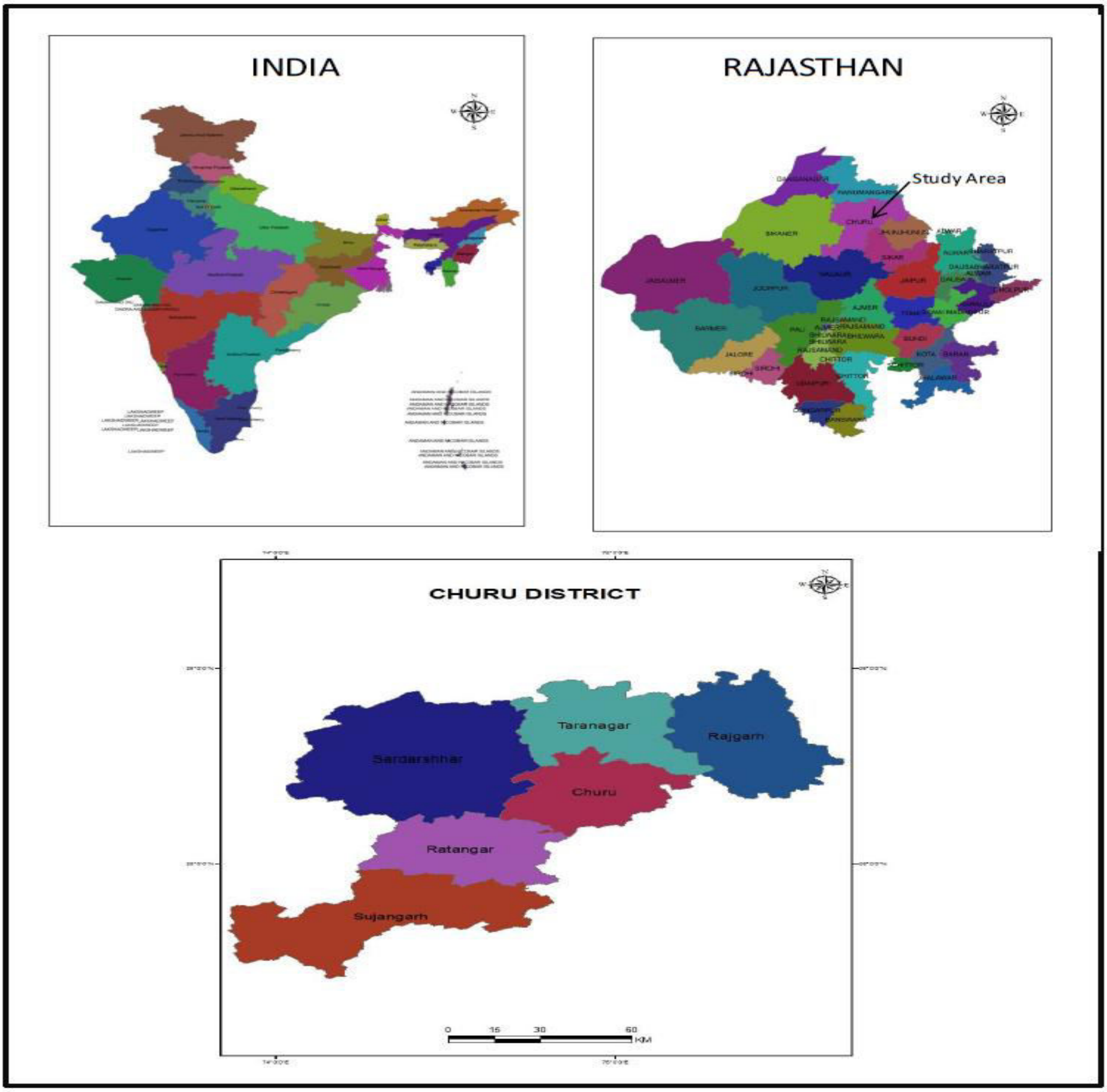

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.423

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

साहित्य पुनरावलोकन :

- **सिंधवी, स्नेहलता** ने अपने शोध अध्ययन 'जल प्रबन्धन' इन्दिरा गांधी नहर क्षेत्र की जल–जमाव और मृदा लवणता की समस्याओं का एक भौगोलिक विश्लेषण में नहरी जल सिंचाई से सम्बन्धित जल जमाव व मृदा लवणता की पर्यावरणीय अवक्रमण की समस्याओं का विशद् आकलन करते हुए, उनका भूमि उपयोग व इस क्षेत्र के फसल प्रतिरूप पर प्रभाव की विस्तृत तथ्यपरक, सारगर्भित व्याख्या करने का प्रयास किया है।
- **जे. टी. कॉपोक द्वारा 1964** में न्यूनतम वर्गों की पद्धति का उपयोग करते हुए 11 फसल क्षेत्रों (प्रथम क्रम के क्षेत्र) तथा 38 फसल संयोजन क्षेत्रों का निर्धारण किया है।
- **रामा प्रसाद (2002)** ने टोंक जिले में कृषि भूदृश्य का परिवर्तन भूमि उपयोग प्रारूप पर लेख लिखे तथा ग्रामीण परिवेश के समुचित नियोजन हेतु सुझाव प्रस्तुत किये।
- **प्रो. बी.बी. शर्मा, अक्षय शुक्ला (2011)** ने ''कृषि संसाधनों पर जनसंख्या दबाव के कारण पर्यावरण की समस्या'' में उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले के विशेष अध्ययन द्वारा क्षेत्र में निरन्तर बढ़ी हुई जनसंख्या के कृषि भूमि उत्पादनों पर पड़ने वाले दबाव का अध्ययन किया है।
- **शर्मा, टी.सी. (1999)** ने अपनी पुस्तक ''टेक्नोलोजिकल चेन्ज इन इंडियन एग्रीकल्चर'' में कृषि, भूमि उपयोग से संबंधित बदलती धरातलीय विषमताओं का अध्ययन किया है, साथ ही कृषि की गहनता, भूमि उपयोग, कृषि नियोजन पर विस्तृत प्रकाश डाला है।
- **सिंह, बी.आर. (1996)** ने अपनी पुस्तक ''रिसर्च इन ज्योग्राफी, लेण्ड यूज चेन्जेज सस्टेबल'' में भूमि के बदलते उपयोग एवं इसका कृषि पर प्रभाव तथा नियोजन से संबंधित विभिन्न लेखकों के लेखों का समावेश किया है।

उद्देश्य :

- चूरू जिले में फसलों के क्षेत्र एवं उत्पादन का विश्लेषण करना।
- चूरू जिले में बदलते कृषि भूमि प्रारूप का विश्लेषण करना
- चूरू जिले में कृषि क्षेत्र में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।

आंकड़ो के स्त्रोत :

शोध पत्र को पूरा करने हेतु विभिन्न प्रकार के द्वितीयक आंकड़ो का संग्रहण जिला कार्यालय चूरू, सांख्यिकी कार्यालय, चूरू, पटवार कार्यालय चूरू आदि सरकारी एवं गैर–सरकारी कार्यालयों से किया गया है। इसके अलावा विभिन्न ऑनलाईन स्त्रोंतो के माध्यम से भी इस सन्दर्भ में नवीन आंकड़ो का संग्रहण कर शोध–पत्र को तैयार करने मे सहायता ली गयी है।

जिले में भूमि उपयोग :

चूरू जिले में वर्ष 2018–19 से 2022–23 के मध्य भुमि उपयोग के वितरण प्रारूप का विश्लेषण निम्न तालिकाओं में किया गया है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल वर्ष 2019–20 के प्राप्त सांख्यिकीय आंकड़ो के अनुसार 1385898 हैक्टेयर था। एवं जिले में वर्ष 2018–19 से 2022–23 में जंगलात के अन्तर्गत क्षेत्रफल 6616 हैक्टेयर था।

| www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

तालिका संख्या 01

चूरु जिले में कृषि अयोग्य भूमि का विवरण (हैक्टेयर में)

वर्ष	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (ग्राम पत्रों के अनुसार)	जंगलात	कृषि अयोग्य भूमि		
			भूमि जो कृषि के अतिरिक्त काम में ली गई	ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि	योग
2018—19	1385898	6616	65199	668	65847
2019—20	1385898	6616	65199	668	65847
2020—21	1385898	6616	65199	668	65847
2021—22	1385898	6616	65199	668	65847
2022—23	1385898	6616	65199	668	65847

स्त्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, चूरू —2022

कृषि अयोग्य भूमि :

जिले में कृषि अयोग्य भूमि के वितरण प्रतिरूप को देखें तो प्राप्त आंकड़ो के आधार पर ज्ञात होता है की जिले में वर्ष 2018—19 से वर्ष 2021—22 तक कृषि अयोग्य भूमि के क्षेत्रफल में कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है। जिले में कृषि अयोग्य भूमि के अंतर्गत भूमि को दो उपवर्गों यथा कृषि के अतिरिक्त काम में ली गयी भूमि एवं ऊसर भूमि में वर्गीकृत किया गया है। कृषि के अतिरिक्त काम में ली गयी भूमि का क्षेत्रफल जिले में 651199 हेक्टेयर जबकि ऊसर भूमि का क्षेत्रफल जिले में 668 हेक्टेयर पाया गया है एवं जिले में कुल कृषि अयोग्य भूमि का क्षेत्रफल 65847 हेक्टयेर पाया गया है।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.423

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

चूरु जिले में कृषि अयोग्य भूमि का विवरण

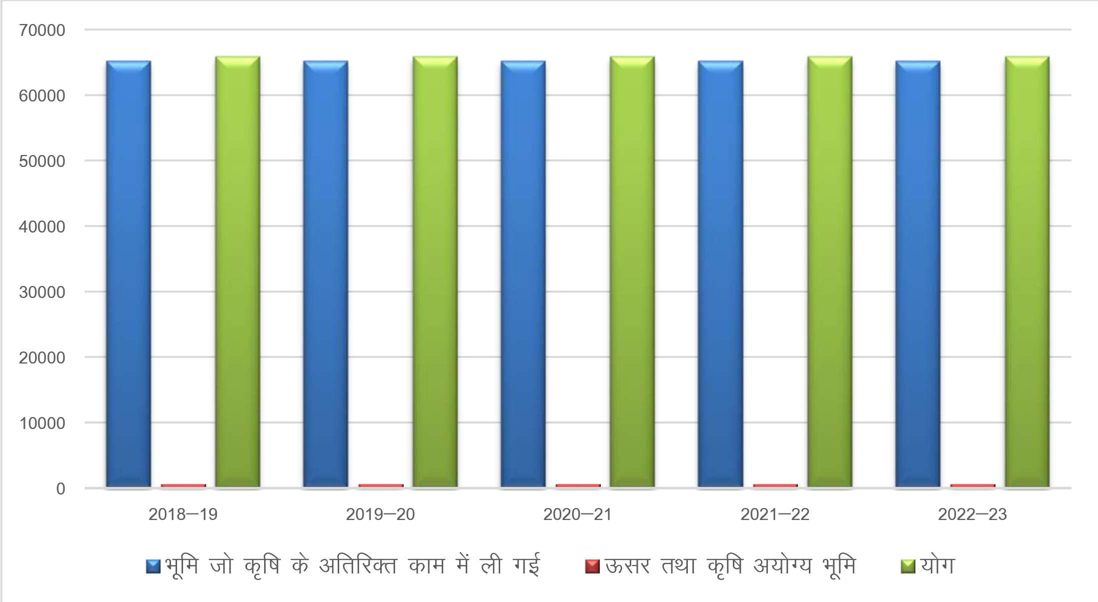

जोत रहित भूमि :

चूरू जिले में पडत भूमि के अतिरिक्त उपलब्ध जोत रहित भूमि का विवरण तालिका संख्या 02 में दिया गया है। जोत रहित भूमि के अंतर्गत तीन प्रमुख उप वर्गों में विभाजित किया जाता है, जो की स्थाई चारागाह एवं अन्य गौचर भूमि, वृक्षों के झुण्ड तथा बाग़ एवं कृषि योग्य बंजर भूमि है। तालिका के आंकड़ो पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है की चूरू जिले में वर्ष 2018–19 से वर्ष 2021–22 के मध्य जोत रहित भूमि के क्षेत्रफल में समरूपता दिखाई देती है। इन वर्ष अंतराल में जिले में स्थाई चारागाह एवं अन्य गौचर भूमि के अंतर्गत भूमि का कुल क्षेत्रफल 37688 हेक्टेयर पाया गया है जबकि जिले में वृक्षों के झुण्ड तथा बाग़ के अंतर्गत भूमि का क्षेत्रफल केवल 18 हेक्टेयर ही पाया गया है जो की काफी कम है। इसी प्रकार जिले में कृषि योग्य बंजर भूमि के क्षेत्रफल पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है की यह क्षेत्रफल जिले में 10987 पाया गया है।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.423

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

तालिका संख्या 02

चूरू जिले में जोत रहित भूमि का विवरण (हैक्टेयर में)

वर्ष	जोत रहित भूमि (पड़त भूमि के अतिरिक्त)			पड़त भूमि	
	स्थाई चारागाह तथा अन्य गोचर भूमि	वृक्षों के झुंड तथा बाग	बंजर (कृषि योग्य भूमि)	अन्य पड़त भूमि	चालू पड़त भूमि
2018—19	37688	18	10987	64489	81167
2019—20	37688	18	10987	43357	47971
2020—21	37688	18	10987	43357	47971
2021—22	37688	18	10987	46577	57593
2022—23	37688	18	10987	42252	46007

स्त्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, चूरू —2022

जिले में पड़त भूमि का दृश्य

पड़त भूमि :

जिस भूमि पर लगातार फसल बोई जाती है, इस कारण एक समय पश्चात उस भूमि की उपजाई क्षमता कम हो जाती है तथा भूमि उदासीन हो जाती है। कृषक इस स्थिति में इस भूमि को एक वर्ष अथवा एक फसल चक्र के लिए खाली छोड़ देता है इस प्रकार की भूमि को ही पडत भूमि के अंतर्गत रखा जाता है। पडत भूमि पर लम्बे समय तक जुताई कार्य नहीं होने के कारण यह बंजर भूमि मे परिवर्तित हो जाती है, बाद में कृषक इस प्रकार की भूमि पर मृदा का उपजाऊपन बढाने हेतु विभिन्न उर्वरकों का उपयोग करके जुताई कार्य करने लगते है। विशेषता के आधार पर पडत भूमि को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है–

1. अन्य पड़त भूमि
2. चालू पड़त भूमि

जिले में गोचर भूमि का दृश्य

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)
Impact Factor 8.423
|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|
|Volume 13, Issue 6, June 2024|
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

अन्य पड़त भूमि :

चूरु जिले मे अन्य पड़त भूमि के अंतर्गत भूमि के क्षेत्रफल के विवरण को देखें तो तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है की जिले मे वर्ष 2018–19 से वर्ष 2022–23 के मध्य इसमे विषमता देखने को मिलती है। चूरु जिले मे वर्ष 2018–19 मे अन्य पड़त भूमि के अंतर्गत भूमि का कुल क्षेत्रफल 64489 हेक्टेयर पाया गया था जबकि अगले दो दशकों मे इस क्षेत्रफल मे जिले मे गिरावट देखने को मिलती है। वर्ष 2019–20 एवं वर्ष 2020–21 मे जिले मे यह क्षेत्रफल केवल 43357 हेक्टेयर पाया गया है। इसी प्रकार जिले मे वर्ष 2021–22 एवं वर्ष 2022–23 मे अन्य पड़त भूमि का कुल क्षेत्रफल क्रमश 46577 एवं 42252 हेक्टेयर पाया गया है।

चूरू जिले में पड़त भूमि भूमि का विवरण

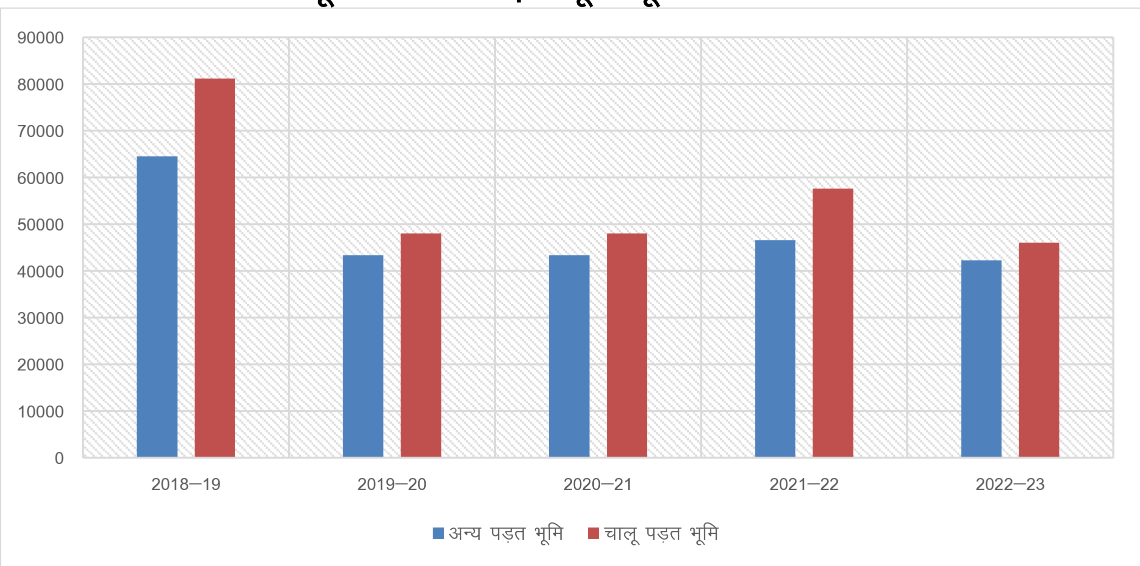

चालू पड़त भूमि :

चूरु जिले मे चालू पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल देखने पर आंकड़ो के आधार पर स्पष्ट होता है की जिले मे इस क्षेत्रफल मे भी वर्ष दर वर्ष विषमता पायी गयी है एवं चालू पड़त भूमि के क्षेत्रफल मे जिले मे उतार चढ़ाव देखें जा सकते है। चूरु जिले मे वर्ष 2018–19 मे चालू पड़त भूमि के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल 81167 हेक्टेयर पाया गया है जो की वर्ष 2022–23 तक का सर्वाधिक है। जिले मे वर्ष 2019–20 एवं वर्ष 2020–21 में चालू पड़त भूमि का क्षेत्रफल 47971

|www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

हेक्टेयर पाया गया है। इसी प्रकार वर्ष 2021–22 मे यह क्षेत्रफल जिले मे 57593 एवं वर्ष 2022–23 मे यह 46007 हेक्टेयर पाया गया है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है की चूरू जिले मे वर्ष 2018–19 से वर्ष 2022–23 के मध्य भूमि उपयोग के वितरण प्रारूप मे कोई विशेष परिवर्तन देखने को नहीं मिलते है। जिले मे वन क्षेत्र एवं कृषि अयोग्य भूमि के क्षेत्रफल मे कोई परिवर्तन नहीं पाया गया है जबकि जिले मे पड़त भूमि के क्षेत्रफल मे इस वर्ष अंतराल मे व्यापक परिवर्तन देखने को मिले है।

REFERENCES

1. Bharadwaj, O.P. (1961). The arid zone of India and Pakistan. In, A History of Land Use in Arid Re-gions (Ed., L. Dudley Stamp), pp. 143-174. UNESCO, Paris.
2. District Statistical Handbook, Churu, 2015, 2020
3. Chouhan D.S. Studies in the utilization of Agricultural Land. Ist: Pd (1966) P-48
4. Dantwala, M.L. & Shah, C.H. (1971) Evaluation of Land Reforms (Central Report) Deptt. of Economics, University of Bombay. P-16
5. Datya, V.S. : Diddee. Jayamala & Gaikwad, G.D. (1983) Process of hand fragmentation and Effects of Land consolldation on cropping and productivity: A case study of village Nirgudi Pune Dietrict, Annals of the national Associatious of India. Vol. 111 No.1, P-12
6. Francklin, W. (1805). Military Memoirs of Mr. George Thomas. John Stockdale, London (reprint), 392p.
7. Haynes, E. S. (1999). Land use, natural resources and the Rajput state, 1780-1980. In, Desert, Drought and Development (Eds., Rakseh Hooja and Rajendra Joshi), pp.53-119. Rawat Publications, Jaipur.
8. Jetske A, Bauma and Christopher A. Scott (2006) : "The possibilities for dry land crop yield improvement in India's Semi arid regions observations from

| www.ijirset.com | A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal | e-ISSN: 2319-8753; p-ISSN: 2347-6710|

|Volume 13, Issue 6, June 2024|

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1306286|

the field” International water management institute Colombo, Sri Lanka CA Case Study 3.

9. Jodha, N. S. (1972): “A Strategy for Dry Land Agriculture”, Economic and Political Weekly, Vol. 7, No. 13 (Mar. 25,), pp. A2-A18.
10. Lakshmi kant sharma S. (1197) : Sustainability of Dry Land Agriculture in India : A case study of Watershed Development Approch” page 117.
11. Ranvir Kumar (2000) “Reclamation of water logged and saline lands through Drainage” in management of water logging problem in Haryana (ed. Dhindwal, A.S. Kuhad, M.S. Vinod Kumar and Suhag L.S.) CCS Haryana Agricultural University Hisar.
12. Stamp. L.D. (1956): The land of Britan, its use and misure hongman Grean & Co. Ltd. London P-426

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details